आर्थिक विकास को गति देने में परोपकार की भूमिका

मेन्स के लिये:

भारत में परोपकार और प्रमुख चुनौतियाँ

चर्चा में क्यों?

भारत वर्ष 2047 तक अर्थात् भारत @100 तक 15,000 अमेरिकी डॉलर की प्रति व्यक्ति आय तक पहुँच सकता है, जिससे समावेशी और सतत् आर्थिक विकास में तेज़ी आएगी।

परोपकार क्या है?

- परोपकार से तात्पर्य धर्मार्थ कार्यों या अन्य अच्छे कार्यों से है जो दूसरों या समाज को समग्र रूप से मदद करते हैं।
- परोपकार में एक उचित कारण के लिये धन दान करना या समय, प्रयास या परोपकार के अन्य रूपों में स्वयंसेवा करना शामिल हो सकता है।

भारत में परोपकार:

- **पूर्व-औद्योगिक भारत:**
  - परोपकार लंबे समय से भारतीय समाज के ताने-बाने में अंतर्निहित है और आधुनिक भारत के निर्माण में इसका बहुत बड़ा योगदान है।
  - पूर्व-औद्योगिक भारत में देखा गया कि व्यापारिक घराने अपनी आय का एक हिस्सा स्थानीय स्तर पर दान में देते हैं।
  - औद्योगीकरण ने तेज़ी से धन सृजन को सक्षम बनाया; सर जमशेदजी टाटा जैसे व्यापारिक नेताओं ने सामाजिक भलाई के लिये धन का उपयोग करने, अनुकरणीय संस्थानों को बनाने के लिये बड़ी मात्रा में दान करने पर अपनी राय व्यक्त की।
- **स्वतंत्रता संग्राम के दौरान:**
  - महात्मा गांधी ने व्यापारियों को समाज में अपनी संपत्ति का योगदान करने के लिये प्रोत्साहित किया क्योंकि भारत का स्वतंत्रता आंदोलन शुरू हुआ था।
  - जमनालाल बजाज और जीडी बिड़ला जैसे उद्योगपतियों ने अपने स्वयं के परोपकारी हितों के अतिरिक्त स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी की पहल का समर्थन किया।

संयुक्त राज्य अमेरिका में परोपकारी मॉडल क्या है?

- भारतीय व्यापारिक राजघरानों के साथ परोपकार में प्रगति देखी जा रही थी, इसी समय अमेरिका में परोपकार का कार्नेगी-रॉकफेलर युग सक्रिय था।
- एंड्रयू कार्नेगी ने प्रभावशाली संस्थानों (जैसे कार्नेगी लाइब्रेरी और कार्नेगी मेलॉन यूनिवर्सिटी) का निर्माण किया और अन्य अमीरों को भी प्रेरित किया।
  - उनकी पुस्तक की अंतिम पंक्ति में लिखा है: "जो आदमी अमीर मरता है, वह बदनाम होकर मरता है।"
- जॉन डी. रॉकफेलर, एक कठोर एकाधिकारवादी, ने अंततः प्रणालीगत सुधारों के लिये बड़ी मात्रा में धन दान किया, विशेष रूप से शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिये।
- रॉकफेलर फाउंडेशन ने भी येलो फीवर के लिये टीका विकसित करने हेतु वित्तीय सहायता की।

भारतीय परोपकार में प्रमुख चुनौतियाँ:

- **विश्वास में कमी:**
  - नवोदित परोपकारी लोग अभी तक प्रभाव क्षेत्र में किये जा रहे अच्छे कार्यों की पूरी तरह से सराहना नहीं कर पाए हैं।
- **दान की संकीर्ण प्रकृति:**
  - देश के कुछ सबसे गरीब हिस्सों को जोखिम में डालने की संकीर्ण प्रकृति की अनदेखी की जा रही है।
- **दान की प्रोग्रामेटिक प्रकृति:**

- दान की प्रोग्रामेटिक प्रकृति के परिणाम असंतोषजनक हैं।
- **उदाहरण:** कई फाउंडेशन और गैर-सरकारी संगठन स्कूली शिक्षा पर काम करते हैं, फिर भी सीखने के परिणामों में सुधार नहीं हुआ है।

आगे का राह

- **संस्थानों का निर्माण करना:**
  - भारत में नए विश्वविद्यालयों के निर्माण के लिये सामूहिक परोपकार की ज़रूरत है।
  - अपनी रैंकिंग में सुधार के लिये IIT और IIM के पूर्व छात्र अनुसंधान केंद्रों को निधि दे सकते हैं।
  - दानकर्ता थिंक-टैंक को फंड प्रदान कर सकते हैं और क्षेत्र-विशिष्ट (जैसे- ऊर्जा संक्रमण पर) या भूगोल-विशिष्ट (जैसे- पूर्वी उत्तर प्रदेश) संस्थानों का निर्माण कर सकते हैं।
  - **उदाहरण:**
    - टाटा परिवार ने जमशेदजी टाटा की परोपकार की परंपरा को जारी रखा और यह बंगलूरू में इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, द एनर्जी एंड रिसोर्सेज़ इंस्टीट्यूट (टीईआरआई), टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल, आदि जैसे संस्थानों के निर्माण में अग्रणी रहा है।
- **सरकार के लिये जोखिम युक्त अनुसंधान एवं विकास निधि:**
  - सरकारें सामाजिक क्षेत्र में प्रमुख कर्ता हैं और शिक्षा, स्वास्थ्य आदि पर करोड़ों खर्च करती हैं।
  - हालाँकि सरकार की संरचना बहुत जटिल है और इसलिये निरंतर आधार पर प्रयोग या नवाचार नहीं कर सकती है; इसके अतिरिक्त राज्य/सरकार की क्षमता भी सीमित है।
  - परोपकारी लोग नवोन्मेषी मॉडलों को वित्तपोषित कर सकते हैं और गैर-लाभ के माध्यम से नए विचारों का परीक्षण कर सकते हैं, सबूत बनाकर, नीति परिवर्तन की वकालत कर सकते हैं और सरकारी कार्यान्वयन का समर्थन कर सकते हैं।
  - **उदाहरण:**
    - नंदन नीलेकणी ने एक नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र बनाया जो भारत के लिये एक सर्वश्रेष्ठ-इन-क्लास डिजिटल आर्किटेक्चर विकसित करने में सरकार का समर्थन करता है (आधार, एकीकृत भुगतान इंटरफेस और ईकेवाईसी के बारे में सोचें)।
- **वितरण में सुधार के लिये सरकारों का समर्थन करें:**
  - एक परोपकारी संस्था के रूप में सरकार के साथ साझेदारी एक स्केलेबल और टिकाऊ प्रभाव बनाने का सबसे प्रभावी तरीका है।
  - इसके लिये परोपकारी लोगों को एनजीओ (जैसे स्कूलों में मिड-डे मील के लिये फंडिंग) के माध्यम से फंडिंग प्रोग्राम डिलीवरी से लेकर सरकार की डिलीवरी की व्यवस्था में सुधार करने वाली पहलों के लिये अपने अभिविन्यास को बदलने की ज़रूरत है।
  - **उदाहरण:**
    - पीरामल फाउंडेशन एस्पिरेशनल डिस्ट्रिक्ट्स कलेक्टिव का समर्थन कर रहा है; वेदिसि फाउंडेशन सरकारों के साक्ष्य आधार और परिणाम उन्मुखीकरण में सुधार के लिये पहल कर रहा है।
- **आर्थिक विकास को सक्षम करें:**
  - परोपकारी लोग अपने धन और अनुभव का उपयोग नीतियों की वकालत करने, निवेश, निर्यात तथा रोज़गार सृजन के लिये अनुकूल परिस्थितियों में सुधार का समर्थन करने एवं भारत की अर्थव्यवस्था को बदलने में मदद करने के लिये कर सकते हैं।

स्रोत: लाइवमिंट

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/role-of-philanthropy-in-accelerating-economic-growth